ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

दृष्टिहीन कलाकार एवं प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन की चुनौतियाँ

डॉ. राजेश शर्मा
संगीत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सार-संक्षेप

ईश्वरीय संरचनाओं में मानव एक विचित्र रचना है। इस विचित्र रचना के भी विभिन्न स्वरूप हैं जैसे कोई गोरा, काला, बुद्धि युक्त, बुद्धि विहीन, शारीरिक रूप से सुदृढ़ और कोई विकलांग। इस विकलांगता के अन्तर्निहित भी कई श्रेणियाँ हैं। जिनमें से ''दृष्टिहीनता'' एक विशेष स्थान रखती है। अगर ''मानव'' ईश्वर की विशिष्ट रचना है तो संगीत रूपी सौम्य व हृदयग्रही कला इस रचना को ईश्वर का विशेष प्रसाद है। इस कला की कठोर साधना व उपासना के उपरान्त ही दृष्टिहीन व्यक्ति एक कलाकार की संज्ञा को प्राप्त करता है। कलाकार बनने के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति की यही इच्छा होती है कि उसकी योग्यता के अनुसार उसे मंच प्राप्त हो। जिसके द्वारा वह अपनी कठोर साधना व मनोभावों को श्रोतागणों के सामने प्रदर्शित कर सकें। इस शोध-प्रपत्र में दृष्टिहीन कलाकारों को प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन करते समय जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उन तत्वों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। भले ही ये तत्व एक सामान्य कलाकार के लिए कोई महत्त्व नहीं रखते, अपितु दृष्टिहीन कलाकार के परिपेक्ष में इनका स्वरूप कुछ अलग ही महत्त्व रखता है। सर्वप्रथम मंच प्रदर्शन के अर्थ एवं उसके प्रकारों पर प्रकाश डाला जाएगा। इसके पश्चात् मंच प्रदर्शन के प्रमुख अंग जैसे—कलाकार एवं श्रोतागण को व्याख्यित किया जाएगा। मंच प्रदर्शन के दो प्रकार जैसे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष में से केवल प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन में दृष्टिहीन कलाकार के समक्ष आने वाली चुनौतियों जैसे—संयोजक की मनोव्यथा, आवागमन, सभागृह, तथा रंग-मंच सम्बन्धी चुनौतियां जैसे—कलाकार की बैठक, नेत्र सम्बन्ध का अभाव, माइक्रोफोन की मुख से दूरी, शारीरिक मुद्राओं में असंतुलन, वाद्यों सम्बन्धित, सहायक सामग्री के प्रयोग के अभाव सम्बन्धित चुनौतियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा। इसके अगले चरण में दृष्टिहीन कलाकार के समक्ष संगतकार सम्बन्धित जो चुनौतियां है जैसे—अभ्यास, सामंजस्यता का अभाव, परस्पर तालमेल का अभाव, मनोवैज्ञानिक तारतम्यता का अभाव, दोनों में दृष्टि का अभाव जैसे महत्त्वपूर्ण कारकों को प्रकाशित किया जाएगा। अन्तिम चरण में दृष्टिहीन कलाकार के समक्ष मंच प्रदर्शन के दौरान श्रोताओं सम्बन्धी जिन समस्याओं का उसे सामना करना पड़ता है उसे व्यक्त किया जाएगा एवं सम्पूर्ण सामग्री संकलन हेतु जिन पुस्तकों, शब्दकोषों एवं दृष्टिहीन वर्ग के विशेष व्यक्तियों से साक्षात्कार किया गया है उसे संदर्भग्रंथ सूची के रूप में जोड़ा जाएगा।

शोध-पत्र

ईश्वरकृत इस संसार में प्रत्येक पक्ष की विविधता के विभिन्न आयाम है। प्राणी जगत में पशु, पक्षी, मनुष्य के आसामान्य स्वरूप के आधार पर एक विशाल काय सृष्टि की सृजना इसी विविधता का परिणाम है। मानव जाति से सम्बंधित होने के बावजूद भी कोई मनुष्य गोरा है तो कोई काला है, कोई पतला है तो कोई मोटा है। कोई अति बुद्धिमान है तो कोई सामान्य ज्ञाता है। यही नहीं, अपितु, शारीरिक संरचना में जन्मजात अथवा किसी दुर्घटना का शिकार होने के पश्चात् जब किसी मनुष्य का अंग शिथिल हो जाता है तो वह विकलांग कहलाता है।

विकलांगता के कई प्रकार हमारे समाज में दृष्टव्य है। जैसे—मूक व बधिर, असंतुलित मानसिक वृति वाले, आरथोपैडिक एवं दृष्टिहीन।

आजकल ऐसे व्यक्ति जिनमें शारीरिक शिथिलता के बावजूद कुछ अलग से करने की सक्षमता है। ऐसे व्यक्तियों की हमारे समाज में कमी नहीं है। हैण्डीकैप, डिस्ऐबल शब्दों के बजाय डिफरैन्टली एबल संज्ञा से सम्बोधित किया जा रहा है। यह वह लोग है जिन्होंने अपनी किसी कमी के कारण अपने भीतर हीन भावना को बिल्कुल भी पनपने नहीं दिया अपितु अपनी मानसिकता को साकारात्मक दिशा प्रदान करके समाज में एक उदाहरण बनने का प्रयास किया।

संगीत एक ऐसी कला है जिसका सम्बन्ध व्यक्ति के मन और भाव से है। संगीत की नादात्मक शक्ति किसी भी व्यक्ति का मानसिक व बौद्धिक विकास करने में बहुत सहायक है। अब जब कोई व्यक्ति दृष्टिहीन है पर यह वास्तविक सी बात है लेकिन नेत्र अभाव में उसे कई समस्याओं का सामना करना पडता है। अब, चाहे वह संगीत शिक्षा प्राप्त कर रहा है, संगीत, शिक्षा प्रदान कर रहा है या संगीत का एक कुशल मंच प्रदर्शक है। इन समस्याओं, चुनौतियों का निरन्तर सामना करने के पश्चात् उसकी मानसिकता पर प्रभाव अवश्य पडता है।

संगीत एक श्रृव्य कला है इसलिए समाज में प्राय: दृष्टिहीन व्यक्ति का विषय चुनाव के अर्न्तगत नृत्य को छोड़कर इसकी गायन व वादन विद्या के साथ अधिकतर सम्बंध जोड़ा जाता है, क्योंकि इसका सम्बन्ध नेत्रों से नहीं और नेत्र के अभाव में अपनी शेष ज्ञानेन्द्रियों पर आश्रित होने के कारण दृष्टिहीन व्यक्ति इसमें पारंगता को हासिल कर सकता है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में इन्हीं दृष्टिहीन व्यक्तियों के मंच प्रर्दषन करते समय उन्हें जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उसका मनोविज्ञानिक विश्लेषण करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रत्येक कलाकार को अपनी कला की सृजना आनन्द की प्राप्ती है और श्रोताओं के द्वारा उसकी कला की प्रोत्साहना सुन कर उसे आसीम सुख

प्राप्त होता है। इस सुख प्राप्ती हेतु हर दृष्टिहीन कलाकार को किसी माध्यम की आवश्यकता रहती है जिसे हम मंच के रूप में जानते हैं। मंच, कलाकार एवं, श्रोता को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करता है। मंच प्रदर्शन की समस्याओं से पूर्व इसके अर्थ को जानना अति आवश्यक है। जो कि निम्नलिखित है—

1. मंच प्रदर्शन का अर्थ— यह दो शब्दों मंच एवं प्रदर्शन से मिलकर बना है। मंच का अर्थ एक विशेष स्थान और प्रदर्शन का अर्थ किसी भी कला अथवा मनोभावों को प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। 'मंच का शाब्दिक अर्थ है—उभरा हुआ आसन, वेदी और सम्मान का आँगन और प्रदर्शन का शाब्दिक अर्थ है—प्रकट होना, प्रदर्शन करना, दिखलावा और नुमाईश'।[1] मंच को अंग्रेजी भाषा में 'स्टेज' कहते है और प्रदर्शन को 'परफ्रोमेंस' अर्थात 'स्टेज परफ्रोमेंस' कहते हैं जिसका अर्थ 'मंच प्रदर्शन' होता है। मंच पर प्रदर्शन का कार्य प्राचीन काल से ही चलता आ रहा है। कालान्तर में इसके स्वरूप में कुछ भेद जरूर देखने को मिलते हैं। हर कलाकार का मूल उद्देश्य तो मंच से अपनी कला प्रस्तुतिकरण के द्वारा रसिकों को प्रभावित करना और उनकी वाह-वाही लूटना होता है। ऐसे में दृष्टि के अभाव में एक दृष्टिहीन कलाकार को उक्त कार्य सिद्धि में सनेत्र कलाकार की अपेक्षा अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसका प्रभाव सीधा उसकी मानसिकता एवं संगीत प्रस्तुतीकरण में देखा जा सकता है।

2. मंच प्रदर्शन के महत्त्वपूर्ण अंग—मंच प्रदर्शन के दो महत्त्वपूर्ण अंग कलाकार और श्रोता है। जहाँ इन दोनों का मिलन हुआ वही मंच प्रदर्शन है।

2.1 कलाकार का अर्थ—कलाकार कला + आकार दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् किसी भी कला को अपने मनोभावों को आकार प्रदान करने वाले व्यक्ति को कलाकार कहते हैं। अंग्रेजी में इसे आर्टिस्ट Artist कहा जाता है। जिसका अर्थ है A person who creates wonics of artist.

2.1.1 कलाकार दो प्रकार के होते हैं—

मुख्य कलाकार—मुख्य कलाकार मंच प्रदर्शन का नायक होता है। सम्पूर्ण प्रस्तुतिकरण का मूल आकर्षण यह मुख्य कलाकार ही रहता है। इसे main artiste भी कहते हैं।

2.1.2 संगतकार—मुख्य कलाकार के साथ सहयोग करने वाले अथवा संगति करने वाले कलाकार को संगतकार कहते हैं। 'संगत शब्द मूल रूप में संस्कृत भाषा के संगति शब्द का अपभ्रंष है। जिसका अर्थ है ''अनुगमन, सहचर्य अथवा मिलन।''[3] संगतकार को अंग्रेजी भाषा में acconpaniments कहते हैं। जिसका अर्थ इस प्रकार है—'a performer of musical accompaniments'[4] संगतकार गायन वादन के अर्न्तगत मुख्य कलाकार के द्वारा सज्जित रागात्मक, भावात्मक, वातावरण को एक तो कायम रखता है दूसरे स्थायी और अन्तरे एवं अन्य रिक्त स्थानों को अपने कौशल द्वारा पूर्ण करता है और कलाकृति में सौन्दर्य को बढ़ाने में अपना अथक प्रयास करता है।

2.2 श्रोता—श्रोता अर्थात् सुनने वाला जिसके लिए मंच पर मुख्य कलाकार तथा संगतकार द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन किया जाता है। श्रोता शब्द का सम्बन्ध 'श्रु' यानी सुनने से होता है, इसलिए श्रोता का अर्थ है सुनने वाला। इसे अंग्रेजी में 'audience' कहते हैं। जिसका अर्थ इस प्रकार है—'a group of listeners or spectarars'[7] श्रोताओं के मनोरंजन के लिए ही मंच प्रदर्शन किया जाता है अगर यूँ कहे कि मंच प्रदर्शन का आधार श्रोतागण है तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। मंच प्रदर्शन में श्रोता भिन्न-भिन्न मनोवृतियों के होते हैं। जिसके आधार पर इन्हें तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। 'पहली श्रेणी में वो श्रोतागण आते हैं जिन्हें संगीत कला का पूर्ण रूप से ज्ञान होता है अथवा गायन, वादन एवं नृत्य में से किसी एक पर उनका पूर्ण नियन्त्रण होता है। दूसरी श्रेणी के विद्यार्थी और वो लोग जिन्हें संगीत का कुछ ज्ञान तो होता है और वह कलाकार की कला प्रदर्शनी से कुछ न कुछ सीखने की कोशिश करते हैं। तीसरी श्रेणी के श्रेता वो लोग हैं जिन्हें संगीतिक कार्यक्रमों में कोई दिलचस्पी नहीं होती। किसी संयोजक के आमन्त्रित करने पर यह लोग वहाँ चले जाते है और वहाँ जाकर जोर-जोर से बातें करते हैं।'[6]

3. मंच प्रदर्शन के प्रकार—मंच प्रदर्शन दो प्रकार का होता है।

1. प्रत्यक्ष, 2. अप्रत्यक्ष

3.1 प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन—'जनता के सम्मुख बैठकर कला प्रदर्शन करना प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन कहलाता है।

3.2 अप्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन—जो प्रदर्शन जनता के सम्मुख न बैठकर प्रस्तुत किया जाए अपितु विभिन्न मीडिया के द्वारा प्रस्तुत किया जाए, वह अप्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन माना जाता है। रेडियो, टी. वी. स्टूडियो रिकार्डिंग इसी के अर्न्तगत आते है।'[7]

''दृष्टिहीण व्यक्ति को कलाकार की संज्ञा प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम कर अपने आप को साबित करना पड़ता है। उसका मूल उद्देश्य अपनी कला को लोगों के सामने रखकर उनसे प्रोत्साहन प्राप्त करना होता है। उसकी इस भूख को तृप्त करता है मंच।''[8] मंच ही किसी दृष्टिहीन व्यक्ति की वर्षों की तपस्या का फलीभूत होने वाला माध्यम है। कलाकार की संज्ञा को पाकर जब कोई दृष्टिहीन मंच प्रदर्शन के लिए अग्रसर होता है तो कुछ महत्त्वपूर्ण घटक उसकी मनोविज्ञानिक को अवश्य प्रभावित करते हैं। साधारण व्यक्ति के लिए भले ही इनका कोई महत्त्व न हो किन्तु एक दृष्टिहीन के लिए एक गम्भीर समस्या बनी रहती है।

4. दृष्टिहीन कलाकार के लिए चुनौती पूर्ण घटक—प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन में एक दृष्टिहीन कलाकार की मानसिकता को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण घटक निम्नलिखित है।

4.1 संयोजक—'सार्वजानिक कार्यक्रमों में नियोजन अत्यंत आवश्यक है। कलाकारों के साथ पत्र-व्यवहार करना, कार्यक्रम का दिन, समय इत्यादि निश्चित करना, कार्यक्रम की प्रसिद्धि विभिन्न माध्यमों द्वारा करना, सदस्यों को कार्यक्रम पत्रिकाएं भेजना इत्यादि सभी बातें संयोजक को ही करनी पड़ती है।'[9]

आजकल संयोजक उन्हीं कलाकारों को पसन्द करते हैं जो अच्छा गाने के साथ सुन्दर हो और उसके शारीरिक हावभाव को ध्यान में रखते हैं। परन्तु दृष्टिहीन कलाकार अपनी दृष्टि के अभाव के कारण संयोजक को प्रभावित नहीं कर पाता। ज्यादातर श्रोतागण इनको बोझ समझते हैं और

अपेक्षाकृत दूसरे कलाकारों को मौका दिया जाता है। इसी बात की पुष्टि करते हुए मस्त राम जी ने अपने शोद्यार्थी के साथ अपनी एक दुखद घटना का वृंतात करते हुए बताया 'बिल्कुल इसी प्रकार कालेज पड़ते समय युवा सम्मेलन में बाँसुरी वादन में प्रथम स्थान ग्रहण करने के बावजूद भी संयोजकों द्वारा उनकी दृष्टिहीनता के कारण इसका विकल्प होने पर उन्हें आगे प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर नही दिया गया। जिसके कारण उन्हें असहनीय पीड़ा का सामना करना पड़ा।'[10] इस प्रकार एक दृष्टिहीन कलाकार को मनोविज्ञानिक तौर पर विशेष कठिनाइयां आती हैं।

4.2 आवागमन में आने वाली चुनौतियाँ—वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति के पास कहीं आने जाने के निजी साधन होते है, जिसका उपयोग वह स्वंय भी कर सकता है। यह साधन व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाते हैं परन्तु नेत्रहीण व्यक्ति इन सभी वाहनों को चलाने में असमर्थ होता है इसलिए वह आवागमन के लिए दूसरे लोगों पर निर्भर करता है। जब भी किसी दृष्टिहीन कलाकार को किसी कार्यक्रम में जाना होता है तो उसे बहुत समस्याओं का सामना करता पड़ता है। उदाहरणार्थ किसी संगीत कार्यक्रम के शुरु होने का समय सांय पांच बजे हैं तो अनुशासन प्रेमी दृष्टिहीन कलाकार की यही कोशिश होगी कि वह वहाँ कुछ समय पहले पहुँच कर मंच संचालक से बात कर ले अथवा संगतकार के साथ थोडा रियाज़ कर, मंच की जरूरतों को समझकर बाद में ध्यान से अपनी कला को प्रदर्शित करे। परन्तु कई बार यह भी हो सकता है कि जिस सहायक ने दृष्टिहीन कलाकार को कार्यक्रम तक पहुंचाया हो वह स्वंय ही देरी से आए। इससे जब दृष्टिहीन कलाकार कार्यक्रम में देरी से पहुंचता है तो संयोजक उसे मानसिक तौर पर बहुत प्रताड़ित करता है तथा तीव्र कटु शब्द बोलकर उसका अपमान कर सकता है जिससे वह अपनी कला का प्रदर्शन अपनी क्षमता के अनुरूप नहीं कर पाता।

4.3 सभागृह तथा रंगमंच—संगीत के कार्यक्रमों में वातावरण निर्माण करने में रंगमंच तथा सभास्थान की व्यवस्था की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उपयुक्त रंगमंच ही सफल प्रस्तुतिकरण का एक महत्त्वपूर्ण कारक है। यह एक प्राचीन प्रणाली है। मंच पर प्रदर्शन करते समय एक दृष्टिहीन व्यक्ति को जो समस्याओं से गुजरना पड़ता है। वह निम्न प्रकार है—

4.3.1 कलाकार की बैठक—सामान्य कलाकार तो मंच पर स्वत: ही चला जाता है परन्तु दृष्टिहीण कलाकार को इस कार्य के लिए सहायक की आवश्यकता पडती है। 'कभी कभी मंच पर बैठते समय दृष्टिहीन कलाकार किसी गलत दिशा की ओर मुख करके बैठ जाता है। सहायक के उसके बैठने के ढंग व दिशा को ठीक कराने पर इस प्रकार से कलाकार के मन में लाचारी के भाव पनपते है। वो अपने आप को शर्मिंदा महसूस करता है। आधा तो मनोबल यहीं पर गिर जाता है और दृष्टिहीन कलाकार के अन्दर बनी सुरों की सुन्दर लहर टूट जाती है। जो उसकी कला प्रस्तुति में विघ्न डालती है।

4.3.2 नेत्र सम्बन्ध (eye to eye contact)—संगीत कार्यक्रमों में रंगमंच ऐसे स्थानों पर बनाया होता है कि कलाकार प्रत्येक श्रोता की दृष्टि का केन्द्र बन सके। इस से कलाकार का श्रोता से सीधा नेत्र सम्बंध स्थापित होता है तथा सनेत्र कलाकार गायन, वादन अथवा नृत्य का श्रोताओं पर प्रभाव देखता रहता है और श्रोताओं की मानसिक प्रतिक्रिया के अनुसार अपने प्रदर्शन में अपेक्षित बदलाव लाता रहता है। परन्तु दृष्टिहीन कलाकार में दृष्टि के अभाव के कारण वे सभा गृह में बैठे श्रोतागण से नेत्र सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता। जिस कारण वे अपनी कला का श्रोता पर पड़ रहे प्रभाव का अनुमान नहीं लगा सकता जो कि एक बहुत बड़ी कठिनाई है। इसी चीज का वहम कि मेरे गाने का, मेरी भाव भंगिमा का, श्रोताओं पर क्या प्रभाव है, श्रोता मेरे साथ जुड़े हैं कि नहीं दृष्टिहीन के मन में एक नाकारात्मक चिंतन का वातावरण बना देता है। मंच प्रदर्शन सम्बंधी किए साक्षात्कार में प्राय सभी विचारकों का मत यही है कि मंच पर श्रोता के साथ नेत्र सम्बंध न बना पाने की समस्या दृष्टिहीन कलाकार की प्रमुख समस्या है।

4.3.3 माईक की सुव्यवस्था—कलाकार और श्रोता को जोड़ने वाला माध्यम मंच के बाद आधुनिक काल में माईक्रोफोन है माईक के कारण मंच से दूर बैठे श्रोताओं को गायन व वादन की सूक्ष्मताओं का भलीभांति पता चल जाता है। सनेत्र कलाकार प्रस्तुति से प्रांरम्भ अथवा मध्य दोनों में अपने माईक को अवश्यकता अनुसार व्यवस्थित कर लेता है 'परन्तु जब दृष्टिहीन कलाकार प्रस्तुतिकरण प्रारम्भ करता है तो एक बार माईक सहायक द्वारा सुव्यवस्थित का देने के बाद गायन-वादन के दौरान व्यवस्था बिगड़ जाने पर वह स्वंय माईक ठीक नहीं कर पाता जिससे एक तो उसका श्रोता से तारतम्य टूट जाता है दूसरा चित एकाग्रता भंग हो जाती है। जिससे वह सफल प्रदर्शन नहीं कर पाता।[12]

4.3.4 शरीरिक मुद्रा—कलाकार की कला मूल्यांकन केवल कलापक्ष एवं भावपक्ष के आधार पर नहीं अपितु दोनों के आधार पर किया जाता है। कभी-कभी कोई भी कलाकार गाते बजाते समय इतना भाव विभोर हो जाता है कि उसकी शरीरिक मुद्राएं बिगड़ जाती है। इसके कारण अच्छे से अच्छा कलाकार भी हास्य का पात्र बन जाता है। 'एक साधारण कलाकार तो अपनी कला प्रदर्शन के समय अपनी मुद्राओं को निधार्रित कर अपनी प्रस्तुति को प्रभावशाली बना सकता है, परन्तु दृष्टिहीन कलाकार अपनी दृष्टि के अभाव के कारण बिगड़ी हुई शरीरिक मुद्राओं के कारण कई बार हास्य का पात्र बन सकता है।'[13]

4.3.5 वाद्य से सम्बंधित—कई बार देखा जाता है कि मंच प्रस्तुति करण के समय वाद्यों में खराबी आ जाती है। जैसे तानपुरे, सितार, तानपुरे आदि की तार का टूट जाना, हारमोनियम की चाबियों में खराबी आना खास तौर पर जब स्केलचेंजर पर एक दम से स्केल बदला जाए, उसकी चाबियों में असंतुलन हो जाता है। ऐसी परिस्थितों को नियन्त्रण करना दृष्टिहीन कलाकार के लिए बहुत कठिन होता है। तबला वादन करते समय भी अचानक तबले की दवाल या बद्धी का टूट जाना, पुड़ी का फट जाना भी दृष्टिहीन कलाकार के लिए एक समस्या बन सकती है।[14] 'एक बार जब मैं मंच पर तबला प्रस्तुति के लिए गया तो एकल वादन प्रस्तुती के समय अचानक डुग्गे का पुडा फट गया तो मैं इतना हैरान हो गया कि कुछ सूझ नहीं रहा था कि अब क्या किया जाए? इतनी जल्दी पुडा बदलने में मैं असमर्थ था यूँ लग रहा था कि चारों और घोर अंधकार सा छा गया हो।'

4.3.6 सहायक सामग्री के प्रयोग का अभाव—जहां तक शास्त्रीय संगीत का सवाल है तो उसमें बंदिशों का काव्य बहुत ही छोटा होता है। इसलिए शास्त्रीय संगीत में सहायक सामग्री के प्रयोग की अवश्यक्ता नहीं होती अपितु सुगम संगीत जैसे गीत, ग़ज़ल, भजन, शब्द इत्यादि में काव्य बहुत ही ज्यादा होता है जैसे स्थाई के अतिरिक्त तीन या चार अन्तरे भी हो सकते हैं। यह भी जरूरी नहीं कि दृष्टिहीन कलाकार को उसके द्वारा गाए जाने वाली हर एक चीज़ का साहित्य याद हो। ऐसी अवस्था में साधारण कलाकार को प्राय: हम देखते हैं कि वह अपने साथ कोई किताब, डायरी अथवा कुछ पन्नों को लिखकर अपने साथ रखतें हैं और अवश्यकता के अनुसार उसकी सहायता भी लेते हैं। किन्तु दृष्टिहीन कलाकार ऐसा करने में पूर्णतय असमर्थ होता है। दृष्टि के अभाव में उसे अपनी स्मृति पर निर्भर रहना पड़ता है और यह भी जरूरी नहीं कि प्रत्येक दृष्टिहीन कलाकार की स्मृति बहुत उच्च स्तर की हो –परम हंस आहुजा जी भी अपने साक्षात्कार में यही बताते हैं कि 'दृष्टिहीन व्यक्ति के लिए ऐसी सहायक सामग्री का प्रयोग ना कर पाना एक विशेष समस्या है।'[15] ऐसी अवस्था में यदि गाते समय दृष्टिहीन कलाकार गीत, ग़ज़ल, शब्द इत्यादि का साहित्य भूल जाए तो उसके मंच प्रदर्शन की सुन्दरता खत्म हो जाती है।

5. संगतकार सम्बन्धी चुनौतियां—संगीत का मूल उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है। जो मुख्य गायक, वादक या नृतक कलाकार के साथ सुयोग्य संगतकार की संगत से पूर्ण रूप से प्राप्त होता है। तैत्रिरीय उपनिषद में आनन्द को ब्रह्मा का ही पर्याय माना है।

''आनन्दो ब्रह्मोति व्यजानातं।
आनन्दात् होव खल्विमानि भूतानि जायन्ते।
आनन्देन जातानि जीवन्ति।
आनन्द प्रयन्त्यमिविषन्तीति।''[16]

अर्थात 'आनन्द ब्रह्म है, आनन्द से ही सभी जीवन उत्पन्न होते है आनन्द में उत्पन्न हो कर जीते तथा मृत्यु के उपरांत आनन्द में ही प्रवेश करते हैं।' गायक और संगतकार दोनों ही कलाकार होते है – संगतकार गायक की रचनात्मक प्रक्रिया का उसी समय मनन एंव चिन्तन करके संगत करता है। संगतकार अपने स्वतंत्र वादन के स्थान पर गायक की रचना और उसकी विद्या पर ध्यान देता है। इस प्रकार संगतकार का कार्य प्रमुख कलाकार के गायन या वादन विधि में परस्पर सम्बंध स्थापित करते हुए उसकी मूल चेतना को प्रेरणा प्रदान करना होता है। 'संगतकार का 'व्यक्तित्व जल की भांति है', जिसे जिस पात्र में रख दिया जाये उसी का रूप धारण कर लेता है।'[17] अपने हृदय की भावनाओं को किसी दूसरे तक पहुँचाना एक कठिन कार्य है परन्तु इस से भी कठिन कार्य किसी दूसरे व्यक्ति की हृदय भावना को तीसरे व्यक्ति तक पहुँचाना है और यह कार्य केवल एक अच्छा संगतकार ही कर सकता है।

मुख्य कलाकार एंव संगतकार दोनों ही कला को सुन्दर व नवीन रूप देते है परन्तु जब मुख्य कलाकार दृष्टिहीन व्यक्ति हो तो संगतकार से उस की अपेक्षाएं बढ़ जाती है। दृष्टिहीन कलाकार को मंच पर कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय संगतकार से सम्बंधित कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

5.1 अभ्यास और तालमेल का अभाव—प्रत्येक कलाकार चाहे वह दृष्टिहीन है चाहे सामान्य वह कुछ खास संगतकारों के साथ ही अभ्यास करते है जिससे उनके बीच में एक तो तालमेल बना रहता है दूसरा सामजंस्यता का स्तर भी काफी बेहतर होता है। एक दम से नई जगह पर नये संगतकारों के साथ जिन्होंने आप के साथ अभ्यास नहीं किया प्रस्तुति करते समय दृष्टिहीन व्यक्ति को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। शास्त्रीय संगीत के मंच पर तो यह इतना विशाल रूप नहीं धारण करते अपितु सुगम संगीत में इसका आकार बहुत बड़ा हो जाता है। 'कई बार जब गाते बजाते समय माईक की आवाज घटानी बढ़ानी हो अथवा लय धीमी या तेज़ करनी हो तो ऐसे में दृष्टिहीन व्यक्ति को नहीं पता चलता कि दूसरा व्यक्ति उसके ईशारे को देख भी रहा है या नहीं अथवा कई बार यह भी तो होता है कि संगतकार भी भाव विभोर होकर आँखे मूंद कर संगत कर रहा होता है। तो ऐसी स्थिति में उसकी प्रस्तुतिकरण पर प्रत्पक्ष प्रभाव देखा जा सकता है।'[18]

5.2 मनौविज्ञानिक तारतम्यता का अभाव—दृष्टिहीन कलाकार और संगतकार के बीच मनौविज्ञानिक तारतम्यता का गुण होना अति आवश्यक है। कलाकार के दृष्टिहीन होने पर संगतकार को उसके कला रूपी रथ को सफलता की मंज़िल तक पहुँचाने के लिए एक कुशल सारथी की भूमिका निभानी चाहिए अगर संगतकार द्वारा उसे प्रस्तुति करते समय निरंतर उत्साहित किया जाए तो उसकी प्रस्तुति में और भी निखार आ सकता है। परन्तु दूसरी और ऐसा भी देखने को मिलता है कि 'यदि संगत कलाकार मुख्य कलाकार की अपेक्षा गुण, आयु, अनुभव में उच्च होता है तो जैसे मानो वह तबले पर संगत कर रहा है तो अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध करने के लिए मात्र सरल ठेका न लगाते हुए तबले की व्याकरण का जरूरत से अधिक प्रयोग करता है तो उसकी श्रेष्ठता के कारण और अपनी दृष्टिहीनता के कारण उसे कुछ कहने में असमर्थ महसूस करता है और मनौविज्ञानिक तौर पर अपने को दबा महसूस करता है और अपनी प्रस्तुतिकरण से न्याय नहीं कर पाता।'[19]

5.3 दोनों में दृष्टि का अभाव—उपरोक्त वर्णित संगतकार से सम्बंधित समस्याओं में यह समस्या उत्कृष्ट सीमा को छूती है कि जब दोनों प्रमुख कलाकार और संगत कलाकार दृष्टिहीन हो। सी. एल. भल्ला जी इसी बात का समर्थन करते हुए बताते है कि 'जब दोनों प्रकार के कलाकार दृष्टिहीन हो और मंच प्रदर्शन से पूर्व कार्यक्रम के विषय को सुनियोजित न किया जाए तो यह बहुत बड़ी समस्या है।'[20]

5.4 श्रोताओं सम्बन्धी समस्याएँ—किसी भी कार्यक्रम के सफल होने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका श्रोता की है। श्रोता भिन्न प्रकार की मनोवृतियों के होते हैं—जैसे कि पीछे वर्णित किया जा चुका है परन्तु दृष्टि के अभाव में कलाकार उन सब प्रकार के श्रोताओं में भेद नहीं कर सकता। श्रोता भी चाहते हैं कि प्रमुख कलाकार के साथ उनका नेत्र सम्बंध बना रहे। ऐसा होने पर ना चाहते हुए भी वह अनुषासन में रहते हैं। किन्तु जब श्रोता को पता है कि मंच पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाला कलाकार

दृष्टिहीन है तो यह परम सत्य है कि उनका व्यवहार कुछ अलग सा ही हो जाता है। कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि सभागृह में सर्वप्रथम पंक्ति में बैठे श्रोतागण जो कि जानते हैं कि हमारे सामने वाला कलाकार कौन सा हमें देख रहा है तो वह इशारों में अथवा स्पष्ट रूप से एक दूसरे से बातें भी करनी शुरू कर देते हैं।

अब दृष्टिहीन कलाकार इन सब बातों का अनुमान नहीं लगा सकता दूसरी और जब कोई सनेत्र कलाकार अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा हो तो एक तो ऐसी समस्या बहुत कम समक्ष आती है और अगर आ भी जाए तो वह इशारे से या किसी और प्रकार से उस परिस्थिति पर नियंत्रण पा सकता है।

श्रोताओं की मानसिक व्यवस्था एवं व्यवहार का पता न लगने के कारण दृष्टिहीन कलाकार अपनी कलाकार के रुख को उनके अनुकूल नई दिशा प्रदान नहीं कर सकता जो कि उसकी सफलता में बाधा सिद्ध हो सकती है। क्योंकि श्रोता किसी भी कार्यक्रम में आनन्द प्राप्ति हेतु पधारता है। श्रोता तो मानो एक मधुमक्खी की भांति है जो कलाकार रूपी पुष्प से मधुपान करने की चेष्टा से पुष्प के समीप आते हैं। अगर श्रोतागण की पीपासा शान्त न हो और उन्हें आनन्द प्राप्ति न हो तो किसी भी कलाकार की कला अधूरी मानी जा सकती है।

उपरोक्त वर्णन से पूर्णतया यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वर्णित सूत्र भले ही सनेत्र व्यक्तियों के लिए कुछ खास अहमीअत न रखते हो परन्तु दृष्टिहीन कलाकार के परिपेक्ष में यह सूत्र विशालार्थी हैं। संयोजक संबंधी, रंगमंच, आवागमन, मंच पर बैठक, नेत्र सम्बंध का अभाव सहायक सामग्री के प्रयोग का अभाव कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण घटक हैं जो दृष्टिहीन कलाकार की मनोवैज्ञानिकता को इतनी सूक्ष्मता से प्रभावित करते हैं कि आम व्यक्ति के लिए यह घटक चिंता का विषय तो क्या बल्कि सोचने का विषय भी नहीं रहता अपितु नेत्र अभाव से जो व्यक्ति अपना जीवन का संचालन कर रहा होता है तो पग-पग पर उसे कई बाधाओं, समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसे पार करने के लिए अवश्यक्ता है तो मात्र अपने दृष्टिकोण को साकारात्मक दिशा प्रदान करने की एवं हर एक परिस्थिति के अनुरूप जीवन व्यतीत करने के लिए अपने आप को तैयार करने की। इस प्रपत्र में दृष्टिहीन व्यक्तियों की केवल उन चुनौतियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। जिनका उन्हें प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन में सामना करना पड़ता है।

पाद-टिप्पणी

1. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृ. 76
2. Oxford Dictionary, p. 25
3. मिश्रा अरुण, भारतीय कंठ संगीत व वादय संगीत, पृ. 67
4. Webster Dictionary, p.6
5. Oxford Dictionary, p. 28
6. Oxford Dictionary, p. 121-122
7. दत्ता, पूनम, भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य, पृ. 176/179
8. साक्षात्कार भल्ला, सी. एल., 10.6.2008.
9. जौहरी सीमा, संगीतायन, पृ. 121-122
10. साक्षात्कार, मस्तराम, 27.5.2008
11. साक्षात्कार, अहूजा परमहंस, 28.12.2008
12. साक्षात्कार, शर्मा, योगेश, 9.6.2008
13. साक्षात्कार, भल्ला सी. एल, 10.6.2008
14. साक्षात्कार, सतिंदर सिंह, 21.1.2008
15. साक्षात्कार, अहुजा परम हंस, 28.1.2008
16. मिश्रा अरुण, भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत', पृ. 75
17. मिश्रा अरुण, भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, पृ. 77

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मिश्र, विजय शंकर, अंतर्नाद- सुर और साज, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली, 2014

तैलंग, मधु भट्ट, ध्रुवपद गायन परम्परा, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, 1995

चौबे, सुशील कुमार, हिन्दुस्तानी संगीत रत्न, उ.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (लखनऊ), 1976

सक्सेना, सुशील कुमार, जनरल ऑफ संगीत नाट अकादमी, जनवरी-मार्च, वॉल्यूम नं. 29-42

The Concise Oxford Dictionary of Current English, H. W. Fowler and F. G. Fowler, Oxford University Press, YMCA Building, Jai Singh Road, New Delhi-110001.

हिन्दी पुस्तकें

जौहरी सीमा, संगीतायन, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2003

आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोश, मोतीलाल बनारसी दास बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-11007, 1993

दत्ता, पूनम, भारतीय संगीत : शिक्षा और उद्देश्य, राज पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, 2006

मिश्रा, अरुण भारतीय कंठ संगीत व वाद्य संगीत, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2002

साक्षात्कार सूची

परम हंस आहूजा, संगीत प्राध्यापक, सनातन धर्म कॉलेज, ऊना (हिमाचल)

रोहिताश्व बाली, संगीत अध्यापक, एस.एल. भवन्स पब्लिक स्कूल, अमृतसर

सी. एल. भल्ला, संगीत प्राध्यापक/रेडियो-टी.वी. अपरुवड आर्टिस्ट, पंजाब एग्रीकल्चर युनीवर्सिटी लुधियाना।

मस्त राम, संगीत अध्यापक, इंस्टीट्यूट आफ ब्लाईंड्स अमृतसर।

योगेश शर्मा, संगीत प्राध्यापक, सरकारी कॉलेज (स्त्रियां) लुधियाना।

रंजना शर्मा, संगीत प्राध्यापिका, सरकारी कॉलेज, गुरदासपुर।

सतिंदर सिंह, संगीत अध्यापक, सरकारी महिला स्कूल अमृतसर।